सप्तम् अध्याय

7. देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय मनोवैज्ञानिक यथार्थ के विविध आयाम

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान का गम्भीर और व्यापक प्रभाव है। मनोविज्ञान के प्रभाव के कारण आज का साहित्यकार नवीन मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए नए माध्यमों को अपनाता जा रहा है । यह बाह्य घटना-वैचित्र्य के स्थान पर अन्तर्जीवन के सत्य का उद्‌घाटन करने की ओर उन्मुख है । बाह्य-जीवन की समस्याओं को पात्रों के अन्तर्जीवन का अंग बनाकर ही प्रस्तुत किया जाता है। यह विशेषता सभी कथात्मक काव्य रूपों में देखी जा सकती है।[1]

मनुष्य का व्यक्तित्व दो प्रकार का होता है - बाहरी व्यक्तित्व व आन्तरिक व्यक्तित्व । सामान्यत: हम व्यक्ति के बाहरी व्यक्तित्व को देखते हैं व समझते हैं जोकि व्यक्ति के आन्तरिक व्यक्तित्व से बिल्कुल अलग होता है। साहित्य केवल बाहरी व्यक्तित्व को चित्रित करके अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता है उसमें आन्तरिक व्यक्तित्व (मनोवैज्ञानिक यथार्थ) का प्रस्तुतिकरण भी आवश्यक होता है। अंग्रेजी साहित्य में इसको "Psychological Realism" कहा जाता है ।

इस प्रकार वह यथार्थ जिसमें व्यक्ति के आन्तरिक (मानसिक) भावों, विचारों, विकारों आदि का वर्णन किया जाए, उसे हम मनोवैज्ञानिक यथार्थ कहते हैं ।

आज पाश्चात्य साहित्य जगत में व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिक विचारधारा प्रमुख रूप से आ रही है । इस कार्य में फ्रायड, एडलर आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । उन्होंने व्यक्ति के अन्तर्मन की विकृतियाँ, प्रमाद, कुण्ठाओं

---

1. डॉ० पुष्पा रानी, आधुनिक रामकाव्य : पुनर्मूल्यांकन, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण-2002, पृ० 248

तथा सामान्य-असामान्य व्यवहार तथा यौन-सम्बन्धों को अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है । भारतीय मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रेमचन्द, जैनेंद्र, इलाचन्द्र जोशी एवं अज्ञेय आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । अत: मनोवैज्ञानिक यथार्थ से अभिप्राय: उन मानसिक परिस्थितियों से है जो एक विशिष्ट काल में एक व्यक्ति को अप्रत्याशित आचरण के लिए बाध्य कर देती है ।

7.1 काम (सेक्स) का चित्रण

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने अचेतन मन की सम्पूर्ण शक्तियों का मूल आधार मानव की दमित काम-वासना को माना है । काम-वासना का दमन इसलिए करना पड़ता है कि समाज में नैतिकता के बन्धनों का आधिक्य है । ये बन्धन मध्यमवर्गीय समाज में सबसे कठोर हैं । मध्यमवर्ग ने अपने समाज को जिन नैतिक नियमों-बन्धनों से जकड़ा हुआ है, उनमें सेक्स संबंधी बन्धन प्रबलतम हैं । मध्यमवर्ग अन्य वर्गों से अपनी संस्कृति तथा जीवन की उच्चता की घोषणा कर सके, इसलिए उसने अपने समाज को कृत्रिम और कठोर बंधनों में बाँध कर अस्वाभाविक जीवन-यापन करने के लिए विवश कर दिया है । औद्योगिकरण के चरम उत्कर्ष के फलस्वरूप मध्यमवर्गीय जीवन के व्यवहार में कृत्रिमता आ गई है । एक ओर धन-लोभ के कारण निम्नवर्ग का शोषण किया जाने लगा, तो दूसरी ओर साथी मध्यमवर्ग को धोखा देने की प्रवृत्ति बढ़ी । जीवन में स्पर्धा और प्रतियोगिता के कारण संघर्ष में वृद्धि हुई, इसलिए जीवन में अधिक जटिलता आई ।

मध्यमवर्ग में नैतिक प्रतिबन्धों के फलस्वरूप नर-नारी के आकर्षण की सहज-भावना भी बरबस दबानी पड़ती है, अत: वह भावना अचेतन मन में पड़ी रहती है । वह भावना समाप्त नहीं होती, अपितु उससे कुण्ठाएँ उत्पन्न होती हैं । वह भावना अचेतन मन से बाहर निकलकर, चेतन मन को दबाने का निरन्तर प्रयत्न करती है । जब भी अवसर मिलता है यह भावना भिन्न-भिन्न रूपों में अपना निकास सम्भव बनाती है । प्राय: देखते हैं कि युवक-युवतियाँ बन्धनों के कारण एक-दूसरे से बोल नहीं सकते, तो युवक

सीटियाँ बजाकर या अंगों द्वारा भद्र और अभद्र संकेत करते हैं। अचेतन मन में से निकलकर दमित काम-वासना ही इन रूपों में प्रकट होती है ।

प्रेमचन्द युग में यौन पक्ष पर मनोविश्लेषणात्मक-पद्धति पर विचार नहीं हुआ । उस युग में काम-वासना को अनैतिक ढंगों से पूर्ति सामाजिक दोष के रूप में चित्रित की गई है । सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में वासना का कोई स्थान नहीं था । वह तो घृणित और अनावश्यक वस्तु मानी जाती थी । जैनेंद्र के 'परख' उपन्यास से सेक्स अभिव्यक्ति मानसिक पृष्ठभूमि से आरम्भ होती है, जो प्रेमचन्दोतर युग में पहुँच कर पूर्ण विकास प्राप्त करती है । देवेश ठाकुर ने तो अपने उपन्यासों में अधिकतर स्थानों पर सेक्स से संबंधित बातों को रखा है । उनके उपन्यास 'इसीलिये' में अवस्थी मीनाक्षी के बारे में कह रहा है । "अब जाकर होश आया है । दो दिन बाद । परसों भी अपने कहे अनुसार तुम समय पर आ गई थी। तब शाम बुझने लगी थी और बत्तियों की उजास अपने सम्मोहन के साथ बिखरने लगी थी । उस पूरी रात मैं तुम्हारे फूलों से खेलता रहा । गालों और ग्रीवों के फूल । वक्षों और बाँहों के फूल। फूलों की घाटियाँ । चम्पई घाटियाँ और साँस-उसाँस में रची-बसी गन्ध। पनीली आँखों के, अधरों के फूल और मुलायम बादलों-सी केश राशि । केश राशि के गुम्फन का पुष्प-गुच्छ । तुम्हारे अंग-अंग में, सच कितनी मादकता बसी है मीनाक्षी।"[1] अवस्थी को मीनाक्षी का शारीरिक सौंदर्य बहुत अच्छा लगता है, जिस कारण उसमें सेक्स की भावना उत्पन्न होती है । इस वर्ग के लोग कई स्थानों पर सेक्स की बातें खुले रूप से करते हैं । मध्यमवर्गीय युवतियाँ तो स्वयं अपने प्रेमी को सहवास के लिए निमन्त्रण देती है तथा अपनी आन्तरिक भावना का व्यक्त करती हैं । 'इसीलिये' उपन्यास में अवस्थी मीनाक्षी से प्रेम करने लग जाता है लेकिन मीनाक्षी एक वेश्या के रूप में कार्य करती है और अपनी सारी सच्चाई से उसे अवगत करवा देती है । वह इसके बाद भी उसके साथ सेक्स करना चाहती है लेकिन अवस्थी कहता है ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 44

"कितनी बार तुम्हारा पत्र पढ़ गया हूँ । कितनी बार तुम्हें और अपने को कोसा है मैंने । कितनी ही बार तुम्हारे पास आने को मन ललका है.... । कितनी ही बार मन ने चाहा है कि तुम्हारे और अपने दुर्भाग्य पर तुम्हारी गोद में सिर रखकर रो लूँ । खूब रो लूँ । लेकिन तुम्हारे पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता । बार-बार प्रश्न पूछता हूँ अपने से-तुम्हारे पास जाकर भी क्या होगा? तुम्हें अपने पास बुलाकर भी क्या होगा? तुमने मुझे निमन्त्रण दे रखा है- अपने सहवास का । अपनी शैया को शेयर करने का । लेकिन अब तुम्हारे बारे में इतना सब जानकर तुम्हारे साथ सो सकूँगा क्या?"[1] इस वर्ग के लोग सेक्स के बारे में बातें करते रहते हैं तथा किसी भी बात को कहने से नहीं कतराते । 'अपना-अपना आकाश' उपन्यास में प्रकाश एक लड़की द्वारा इशारा करने और आँख मारने से उसके पीछे लग जाता है लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं होते कि वह उस लड़की को अपने साथ ले जाए लेकिन उसकी इच्छा सेक्स करने की होती है । 'जनगाथा' उपन्यास की मध्यमवर्गीय शुभांगी भी सेक्स की इच्छा अपने 'सर' के सामने व्यक्त करती है। इस पर उसके 'सर' की भावना इस प्रकार की होता है कि "मेरा सारा शरीर झनझना उठा । मैंने उसे गौर से देखा-सौंदर्य और आकर्षण की जीवन्त प्रतिमा । देह को पोर-पोर सुता हुआ । कहीं कोई नुक्स नहीं । पूरा चेहरा आमन्त्रण से भरा हुआ । मौन आमंत्रण।..... मैं थोड़े समय के लिए अपने को भूल गया। लेकिन जल्दी ही मुझे होश आ गया । सामाजिक मर्यादाएँ मध्यमवर्गीय मानसिकता पर जल्दी हावी हो जाती हैं । मैंने अपने स्वर को यथासम्भव गम्भीर बनाते हुए कहा-तुम जानती हो, तुम किससे क्या कह रही है?"[2] मध्यमवर्गीय लोगों को सेक्स में तो भरपुर रूचि होती है लेकिन उनकी मर्यादाएँ उन्हें पीछे खींच लेती हैं ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 60
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 405-406

कई मध्यमवर्गीय लोग ऐसे होते हैं जो केवल सेक्स को ही सब कुछ मानते हैं और शादी के बाद निरन्तर सेक्स करते हैं तथा अपनी पत्नी की भावनाओं को सही से समझ नहीं पाते और मेन्सैज के दिनों में भी सेक्स करने से नहीं चूकते । इस प्रकार के लोग पत्नी को भोग्या मात्र मानते हैं । इस पर मध्यमवर्गीय स्त्री अपना विरोध प्रकट करती है । "देख बिन्दु..... हम तीस-बत्तीस की हो चली हैं । अब भावुक होकर तो हम अपनी जिन्दगी जी नहीं सकते। बच्चों की जिम्मेदारियाँ भी हम पर हैं ही । इसलिए उनके लिए हमें अपने आपको फ्री रखना ही होगा । नहीं तो उनकी दुर्गति हो जायेगी । फिर एक बात ओर है- मैं तो अब पुरुष से हेट करने लगी हूँ । साला शादी के बाद भी 'रेप' करता है । 'मेन्सैज' के दिनों तक में नहीं छोड़ता । अब माई डियर कुछ ऐसा होना चाहिए कि च्वाइस हमारी हो, सिर्फ हमारी।"[1] पुरुष द्वारा निरन्तर सेक्स करने से मध्यमवर्गीय नारियाँ विरोध की स्थिति में आ जाती हैं । वे अपना हक माँगती हैं और पुरुष समाज से नफरत करने लग जाती हैं । हर जगह पर सेक्स की भावना मध्यमवर्गीय लोगों में देखने को मिलती है । फिल्म इण्डस्ट्री में जो भी लोग होते हैं सभी सेक्स की भावना को लेकर ही कार्य करते हैं । 'काँचघर' उपन्यास में इण्डस्ट्री के लोगों की प्रवृत्ति को दिखाया गया है । "लेकिन इतना सब कुछ होने पर भी क्या कशिश है इण्डस्ट्री में...।

कशिश तो होगी ही । पैसा, शोहरत और सेक्स तीनों तो यहाँ हैं- आदमी को और क्या चाहिए । इसीलिए तो बड़े-बड़े कमिटेड और आर्ट डाइरेक्टर-एक्टर और राइटर भी यहाँ पायजामा खोलकर बैठ जाते हैं ।"[2] इसमें बताया गया है कि इस वर्ग के लोग हर समय सेक्स करने को तैयार रहते हैं और सेक्स की भावना को लेकर ही आगे की नीति तैयार की जाती है ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (कांचघर), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 325
2. वही, पृ० 329

मध्यमवर्गीय लोगों में सेक्स की भावना रहती है और वह निरन्तर उभरती भी रहती है लेकिन अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर वे इसे दबा देते हैं । कई बार तो पैसे की कमी के कारण भी इसे ठुकरा दिया जाता है लेकिन शादी के बाद तो कई मध्यमवर्गीय लोग सेक्स को ही अपना जीवन बना लेते हैं और मेन्सैज के समय भी नहीं छोड़ते । जिससे नारियों में विद्रोह की भावना पैदा होती है । फिल्म इण्डस्ट्री में तो सेक्स के बिना कोई कार्य होता ही नहीं । सभी सेक्स के लिए तैयार होते हैं बस उन्हें मौका मिलना चाहिए ।

7.2 सेक्स का मध्यमवर्गीय जीवन पर प्रभाव

सेक्स का मध्यमवर्गीय जीवन पर बड़ा कुप्रभाव पड़ता है। मध्यमवर्गीय युवक-युवतियों को सेक्स के ज्ञान से वंचित रखा जाता है। इसलिए वे सेक्स के लिए दूसरे रास्ते अपनाते हैं और शादी से पहले ही सेक्स कर लेते हैं । इसके परिणामस्वरूप युवक का युवती के प्रति आकर्षण होता है, वह फीका पड़ने लगता है । इसके कारण लड़का अपनी प्रेमिका को दूसरों द्वारा भी प्रयोग करवाता है। 'अपना-अपना आकाश' उपन्यास में अतुल जैन शंकुतला के साथ ऐसा ही करता है और वह चाहता है कि वह उसके दोस्त के साथ भी सेक्स करे । इस पर शंकुतला अतुल को अपना पति तो मानती है लेकिन दूसरों के साथ कुछ भी करने से मना कर देती है और कहती है- "तुमने आज मेरा अपमान किया है.... बहुत बड़ा अपमान किया है.... क्या इसीलिए तुम मुझे यहाँ लाये थे? वेश्यावृत्ति मुझे करनी होती तो मैं बम्बई में भी कर सकती थी.... । तुम यहाँ से एकदम चले जाओ... यू गेट आऊट । लेकिन पैसे और शराब की गर्मी में अतुल यह सब कहाँ सुनने वाला था । अपने दोस्त को एक भद्दा इशारा करके वह वहाँ से निकल आया ।"[1] शंकुतला अतुल जैन को अपना प्यार मानकर और उसके साथ सेक्स करके बहुत बड़ी गलती करती है । अब वह इस बात से बहुत पछताती है । 'जनगाथा'

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 150

उपन्यास में दिखाया गया है कि शादी से पहले सेक्स आदि करने से शादी के बाद उसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं तथा अपनी वास्तविक पत्नी से इन बातों को छुपाना पड़ता है लेकिन इस प्रकार की बातें हमेशा जहन में रहती हैं जो कभी नहीं छूटती । शादी से पूर्व की बातें जो किसी और के बारे में सोची गई थी, वो वर्तमान जीवन में दु:ख का कारण बनती हैं । "छोटे-छोटे सपनों की शय्या सजी है और शुभांगी की सारी संभावनाएँ मेरी गोद में हैं। पूरा शरीर । शरीर का पोर-पोर । गुलाबी हथेलियाँ और वक्षों की माँसलता.... ओह ! समर्पण को स्वीकारने का सुख कितना मादक है... मैं उसमें खो जाता हूँ.... तभी पास में आहट होती है। मेरा ध्यान टूट गया है । सामने शोभा खड़ी है ।- अंधेरे में क्या कर रहे हो । बत्ती तो जला देते और वह खट् से स्विच ऑन कर देती है ।

मुझे लगता है, मैं निर्वस्त्र पकड़ लिया गया हूँ । अपने कपड़ों को संभालते हुए मैं सहज होने की कोशिश करता हूँ ।"[1] शादी के पश्चात् हमेशा एक डर-सा बना रहता है ।

सेक्स सभी के लिए अनिवार्य होता है लेकिन सेक्स यदि बिना सोचे-विचारे किया जाए तो उसके दुष्परिणाम भी भोगने पड़ सकते हैं । देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में यह प्रभाव दिखाया है। शादी से पहले किया गया सेक्स हमेशा से परिवारों में टूटन लाता है। लड़कियों को तो और भी अधिक भयंकर परिणाम सेक्स के कारण भुगतने पड़ते हैं । लड़की कई बार अपने प्रेमी के दोस्त से भी सेक्स करवाना पड़ता है हालांकि उसकी स्वयं की कोई इच्छा नहीं होती ।

7.3 सेक्स की अतृप्ति का चित्रण

मध्यमवर्ग एक ऐसा वर्ग है जो हमेशा से कुछ न कुछ अच्छा ही चाहता है तथा अपने जीवन को खुशमय ढंग से जीना चाहता है लेकिन कई प्रकार की परिस्थितियाँ उसके जीवन में सुख की बजाय दु:ख पैदा कर देती

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 408-409

हैं। वह सेक्स करना चाहता है लेकिन इससे उसे अतृप्ति मिलती है क्योंकि उसकी मानसिक स्थिति ही ऐसी बन जाती है । मध्यमवर्ग के युवक कई लड़कियों के सम्पर्क में आते हैं लेकिन अपनी स्थिति के अनुसार वे उनसे संभोग नहीं कर पाते और उनके मन में सेक्स बस एक इच्छा बनकर रह जाती है । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'भ्रमभंग' में चंदन एक प्रोफेसर होता है, जो कई लड़कियों के सम्पर्क में आता है और शादी भी करना चाहता है लेकिन यह बात उसके मन में ही रह जाती है क्योंकि वह पहले भी सेक्स से अतृप्त रह चुका है और अब वह इस महँगाई के दौर में एक नौकरीशुदा शुभी डंग से शादी कर लेता है । इस वर्ग के लोग परेशानियों और समस्याओं के कारण अपनी सेक्स की इच्छा को मार लेते हैं । 'जनगाथा' उपन्यास में शुभांगी सेक्स चाहती है लेकिन मध्यवर्गीय मजबूर व्यक्ति ऐसा करने में असमर्थ होता है । "मेरा सारा शरीर झनझना उठा । मैंने उसे गौर से देखा-सौदर्य और आकर्षण की जीवन्त प्रतिमा । देह का पोर-पोर सुता हुआ । कहीं कोई नुक्स नहीं । पूरा चेहरा आमन्त्र से भरा हुआ । मौन आमंत्रण... । मै थोड़े समय के लिए अपने को भूल गया । लेकिन जल्दी ही मुझे होश आ गया । सामाजिक मर्यादाएँ मध्यमवर्गीय मानसिकता पर जल्दी हावी हो जाती है। मैंने अपने स्वर को यथासम्भव गम्भीर बनाते हुए कहा- तुम जानती हो, तुम किससे क्या कह रही हो?"[1] जब मध्यमवर्ग के संस्कार आगे आ जाते हैं तो सभी कुछ त्यागना पड़ता है । "मै फिर काँप उठा । लेकिन अपने भीतर हिम्मत बटोरता हुआ बोला- शुभांगी, पता नहीं, तुम यह सब कैसे कह गई । तुम जानती हो, मै बाल-बच्चे वाला आदमी हूँ । कुछ सालों में मेरी बेटियाँ तुम्हारे बराबर की हो जाएँगी.... मेरा अपना परिवार है... मैं... ।"[2] इस पर शुभांगी कहती है कि मै आपके परिवार पर कोई आँच नहीं आने दूँगी, बस आप अपना खाली समय मुझे दे देना । इस पर मध्यमवर्गीय कहता है "नहीं

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 405-406
2. वही, पृ० 406

शुभांगी, यह मुझसे नहीं हो सकेगा । मैं मानता हूँ शुभांगी, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो । तुम बहुत सुंदर हो । तुम बहुत जहीन हो, तुम बहुत आकर्षक हो । लेकिन मेरी अपनी सीमाएँ हैं । मेरा अपना परिवार है.... मेरी अपनी जिम्मेदारियाँ हैं... मेरी..."[1] इस बात पर मध्यमवर्गीय शुभांगी के मन में आई सेक्स की भावना अधूरी रह जाती है और वह वहाँ से जाने की बात करती है । वह सेक्स से अतृप्त रह जाती है । सेक्स की अतृप्ति के कारण ही मध्यमवर्गीय स्त्री सेक्स के दूसरे तरीकों को अपनाती है । यदि पति से वह अतृप्त रह जाती है तो वह कहीं दूसरी ओर देखती है । 'काँचघर' उपन्यास में पति के व्यस्त रहने पर और पत्नी को अतृप्त रखने के कारण पत्नी अपने स्वयं के बेटे के साथ सेक्स करने से भी नहीं कतराती । "कुछ साल और बीतते हैं । लड़का बड़ा होकर डॉक्टरी पढ़ रहा होता है। तभी एक दिन रात को प्लेन से पति अपनी पत्नी के शहर में आता है । फ्लैट पर आकर घंटी बजाता है । थोड़ी देर के बाद पत्नी खुद दरवाजा खोलती है । पति को इस वक्त आया देख कर भौंचक-सी रह जाती है और सिर्फ इतना कह पाती है- 'इस वक्त बिना कोई टेलिफान किए छुए....।' पति उसकी आँखों में देखता रह जाता है । वह सीधा बैड-रूम में जाता है। वहाँ वह देखता है कि पलंग पर आँखें बन्द किए उसका नंगा बेटा निढाल पड़ा है ।"[2] यह मध्यमवर्गीय पत्नी की सेक्स अतृप्ति को दिखलाता है कि सेक्स को पूरा करने के लिए स्त्री कोई भी रास्ता अपना सकती है और पुरुष भी इसमें संलिप्त रहता है ।

7.4 सेक्स के कारण मानसिक संघर्ष का चित्रण

सेक्स की तृप्ति न होने के कारण व्यक्ति प्राय: मानसिक संघर्ष में उलझ जाता है और हर समय परेशान रहता है । देवेश ठाकुर के उपन्यास

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 406
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (कांचघर), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 402

'इसीलिये' का अवस्थी इसी का शिकार है। वह मीनाक्षी से प्यार करता है और उसके साथ सेक्स भी करता है। इसके पश्चात् मीनाक्षी एक पत्र के द्वारा अपने बारे में सब कुछ बता देती है कि वह एक वेश्या का कार्य करती है । इसके बाद अवस्थी कह रहा है "मीनाक्षी, तुम्हें मालूम नहीं कि अपने पत्र से तुमने मेरी जिन्दगी में जो गहरा गड्ढा खोद दिया है, उससे कोई जल-स्त्रोत कभी नहीं फूटेगा । वहाँ उस अन्धेरे गड्ढे में, बिच्छुओं का वंश बढ़ेगा जो हमेशा-हमेशा, बार-बार मुझे डसता रहेगा ।"[1] अवस्थी का मानसिक संघर्ष निरन्तर बढ़ता जाता है और उसे हर समय दर्द रहता है तथा उसे अपना जीवन बड़ा दु:खमय लगने लगता है। मीनाक्षी ने उसे प्यार देने की बात की थी, पर बाद में उसे छोड़ दिया । वह कहता है, "मीनाक्षी ने जिन्दगी के नासूरों पर अपनी ममता का हाथ रख देने का कितने कमाल का अभिनय किया था । मैं पागल था, उसे सच समझ बैठा । उसके साथ ने, मेरे कच्चे घावों को काफी भर दिया था । लेकिन मुझे क्या पता था कि एक दिन वह किसी कुल्हाड़े से मुझे यों चीर जाएगी ।"[2] अवस्थी को सेक्स के कारण मानसिक संघर्ष करना पड़ता है, जिस कारण वह अपना जीवन सही ढंग से नहीं जी पाता ।

सेक्स के कारण निरन्तर इस वर्ग को मानसिक संघर्ष करना पड़ता है । वह सेक्स की बातों में उलझा रहता है और सही स्थिति में वह नहीं आ पाता । 'भ्रमभंग' उपन्यास में चन्दन का सेक्स के कारण मानसिक संघर्ष दिखाया गया है "मन भटक जाता है । यह उभरती हुई सुबह । यह अस्पताल । बीमारी । कमजोरी। कमजोर मन । कमजोर मन बार-बार भटकता है । भटकता है तो भटकता जाता है । केरल से कुमाऊँ तक । ममता से आकर्षक तक। पतली-पतली ऊँगलियाँ श्यामल । कोमल । बगल में दबी हुई

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 50
2. वही, पृ० 57

चिमन्ना । मिस चिमन्ना । मिसेज नेगी क्या....?"[1] इस प्रकार मध्यमवर्गीय व्यक्ति को सेक्स के कारण मानसिक संघर्ष करना पड़ता है ।

7.5 सेक्स कुण्ठा की प्रतिक्रिया का चित्रण

मध्यमवर्ग के लोग सेक्स के कारण मानसिक संघर्ष करते हैं जिसके कारण उनके अन्दर कुण्ठा बन जाती है । जब उन्हें सेक्स की पूर्ति नहीं हो पाती तो वे दूसरे तरीकों को अपनाते हैं । देवेश ठाकुर के 'इसीलिये' उपन्यास का अवस्थी जब किसी का प्यार प्राप्त नहीं कर पाता तो वह रण्डी-खाने जाता है जिसके बारे में उसके दोस्त रघुवंशी को पता चलता है तो वह उसे टोकता है और ऐसा करने से मना करता है । अवस्थी कहता है, "इन्सान दु:खी हो, अकेला हो और उसके पास पैसे की कमी न हो तो ऐसे हालात में हर आदमी साधु, सन्त और महात्मा ही तो नहीं बन पाता । मैं तो बहुत मामूली आदमी हूँ । मामूली-सी ही जिन्दगी भी जीना चाहता था। लेकिन तकदीर में वह भी नहीं था । फिर भी, लाख बदकिस्मत होने के बावजूद आदमी सुख की तलाश तो करता ही है। अब चाहे शराब हो या रंडीबाजी-इंसान को थोड़े समय के लिए सकून तो देती ही है । रघुवंशी मुझे समझने की कोशिश क्यों नहीं करता है ।"[2] मध्यमवर्गीय व्यक्ति सेक्स कुण्ठा के कारण हर समय परेशान रहता है और उसे किसी भी बात की सूझ नहीं रहती । उसके लिए जीवन जीना दुभर हो जाता है । 'अपना-अपना आकाश' उपन्यास में भी दिखाया गया है "फिर वह इन सबको अपने बिस्तर पर बिछा लेता है.... और मुँह तक चादर ओढ़कर सोने की कोशिश करता है... । और तब वह महसूस करना चाहता है...। लेकिन उससे कुछ भी नहीं किया जाता... एक ठण्डापन उसकी नसों में बहने लगता है.... आक्रोश पानी हो जाता है...

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 75
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), पृ० 95

उसे सिर्फ यह महसूस होता है कि वह एक लोथड़ा मात्र है ।"[1] मध्यमवर्गीय व्यक्ति सेक्स तो करना चाहता है लेकिन वह इससे वंचित रह जाता है और कुण्ठा का शिकार बन जाता है । इसके बाद उसके जीवन पर विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती हैं । 'भ्रमभंग' उपन्यास में मध्यमवर्गीय चंदन में सेक्स कुण्ठा है और मेघा में भी । वे दोनों ही अपनी सेक्स कुण्ठा की प्रतिक्रियाएँ करते हुए दिखाई देते हैं । "मेघा अन्धेरे में मेरी ओर देख रही है, मैं देखता हूँ ।

'मेघा.... ।'

वह अपनी हथेली में मेरा हाथ रख लेती है । उसकी हथेली उसकी गोद में है । मेरे तपते हाथ के ऊपर उसका काँपता-पसीजा हुआ ठण्डा हाथ।

'मेघा?'

उसका सिर मेरे कन्धे पर लटक जाता है ।"[2]

मध्यमवर्गीय लोगों में हमें सेक्स कुण्ठा की प्रतिक्रिया भी देखने को मिलती है । जब वे सेक्स नहीं कर पाते तो वे किसी भी औरत के थोड़ा-सा भी पास होने पर उसे छेड़ने लग जाते हैं और अपनी कुण्ठा को प्रकट करते हैं । कई बार तो पुरुष और औरत दोनों में सेक्स कुण्ठा होती है और वे जब आपस में मिलते हैं तो सेक्स की प्रतिक्रियाएँ करते हैं । वे अपनी कुण्ठा को व्यक्त कर देते हैं ।

7.6 सेक्स से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण

मध्यमवर्गीय युवक-युवतियों में सेक्स की अतृप्ति रह जाये या कोई कुण्ठा बन जाये, तो उनके जीवन के स्वाभाविक विकास में बाधा आने लगती है । निम्नवर्ग तो अश्लील बातों पर बातचीत करके मन के विचारों को प्रकट कर देते हैं, पर मध्यमवर्ग नैतिक मान्यताओं के कारण तथाकथित सब अश्लील बातें मन के भीतर ही दबाये रखता है । यदि किसी कारण से सेक्स में

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 123
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), पृ० 24

संलिप्त हुआ भी जाये तो उससे बहुत-सी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'इसीलिये' में दिखाया गया है कि जब मध्यमवर्गीय मीनाक्षी अपने अंकल द्वारा नोची जाती है तो इससे वह समझ जाती है कि मुफ्त में शोषित होने से तो यह धंधा करने में ही फायदा है। फिर वह वेश्या-व्यवसाय करने लगती है । एक दिन उसे अवस्थी मिलता है जिससे वह प्रभावित होती है और उसके अन्दर सेक्स कुण्ठा देखती है । वह उसे एक अच्छा इंसान मानती है लेकिन वह अपने बारे में सच्चाई नहीं बताती क्योंकि यदि वह सच्चाई बता देती कि वह एक वेश्या है तो उसके मन में घृणा की भावना आ जायेगी । वह कहती है, "तुम्हारी इस शालीनता के मोह ने अभी तक मेरी जबान बन्द रखी है और जिस बात को मुझे, बहुत पहले बतला देना चाहिए था, मैंने जान-बूझकर तुम्हें नहीं बतलाया। क्योंकि मै जानती थी कि एक बार अपने बारे में सफाई और सच्चाई के साथ बता देने के बाद तुम मेरा मुँह भी देखना पसन्द नहीं करोगे ।"[1] इस वर्ग के युवक-युवती शादी से पहले सेक्स कर लेते हैं तो इसके भयंकर परिणाम उन्हें झेलने पड़ते हैं । 'जनगाथा' उपन्यास में सलमा और जावेद दोनों आपस में प्यार करते हैं । सलमा के घरवाले उसको जावेद के साथ रहने से मना करते हैं लेकिन वह अपना सब कुछ छोड़कर उसके साथ भाग जाती है और उसे ही अपना सब कुछ मानने लगती है । जब सलमा के गर्भ में उसका बच्चा पल रहा होता है, तो वह उसे गिराने को कहता है और उससे शादी करने से भी मना कर देता है । उसने जावेद से कहा, "चाहे वह शादी करे या न करे । गर्भ वह नहीं गिरायेगी। उसने पूरी ईमानदारी से उसे आत्म-समर्पण किया है । अपनी भावना को, अपने समर्पण को वह पाप नहीं मान सकती । वह अपनी कोख में पलते हुए अंकुर को नष्ट नहीं होने देगी...."[2]

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 46
2. वही (जनगाथा), पृ० 335

सेक्स के कारण मध्यमवर्गीय लोगों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इस वर्ग के लोग यदि सेक्स कर लेते हैं तो इसके परिणाम तो उन्हें भुगतने ही पड़ते हैं लेकिन इसके बाद वे अच्छा भी बनना चाहते हैं । परन्तु परिस्थितियाँ उन्हें अच्छा नहीं बनने देती जिससे उनकी समस्याएँ निरन्तर बढ़ती ही जाती हैं । इस कारण से लोग परेशान रहते हैं और अपना जीवन अच्छे ढंग से नहीं जी पाते ।

7.7 सेक्स के उदात्तीकरण का चित्रण

आलोच्य युग में उदात्तीकरण के अनेक रूप चित्रित हैं । जैनेन्द्र के 'व्यतीत' उपन्यास का जयन्त इधर-उधर भटकने के पश्चात् सेना में भर्ती हो जाता है और इस रूप में अपने सेक्स का उदात्तीकरण करने का प्रयत्न करता है । कुछ युवक क्रान्तिकारी बनकर सेक्स का उदात्तीकरण करते हैं जैसे 'निर्वासित' उपन्यास का महीप क्रान्तिकारी दल का संगठन करता है, और 'विवर्त' उपन्यास का जितेन क्रान्तिकारी बन जाता है । मध्यमवर्गीय युवतियाँ अपने सेक्स का उदात्तीकरण दूसरे ढंग से करती हैं । पहाड़ी के 'सराय' उपन्यास की रेखा अनेक पुरुषों से परिचय रखती है । अवकाश के क्षणों का अधिकांश भाग उन्हीं से बातचीत करके व्यतीत करती है । इसी प्रकार से देवेश ठाकुर के उपन्यासों में सेक्स का उदात्तीकरण दिखाया है । 'भ्रमभंग' उपन्यास में चंदन का उदात्तीकरण इन बातों से जाहिर हो जाता है "नौकरी है। ठीक है । लेकिन दिन संघर्ष के ही हैं । तुम्हारी याद के सहारे ये दिन काट रहे है । सच, ठीक समय पर एक बिन्दु पर केंद्रित हो जाना भी कितना अच्छा लगता है । मन भटकने से बच जाता है । मैं यहाँ इसीलिए बच गया हूँ मेघा । तुम पर बड़ा प्यार आता है । तुम्हारे लिए क्या कुछ करने को मन नहीं करता । लेकिन क्या कर सकता हूँ। मेरा प्यार लो मेघा । ढेर सारा प्यारा । इसे संभालकर रखना । आज तो मेरे पास बस यही है ।"[1] मध्यमवर्गीय व्यक्ति जीवन से जूझता है और हर प्रकार के प्रयास निरन्तर

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 63

करता रहता है । मध्यमवर्गीय चन्दन भी अपने जीवन को सुखी और समृद्ध बनाना चाहता था लेकिन परिस्थितियाँ उसके विपरित रहीं । उसके जीवन में बहुत-सी लड़कियाँ आई लेकिन वह प्यार उसे न मिल सका जो वह चाहता था। फिर उसे चिमन्ना मिलती है जिसे वह उदात्त दृष्टि से देखता है। सेक्स का उदात्तीकरण यहाँ पर देखने को मिलता है । वह कहता है, "मुझे तुम्हारा साथ चाहिए । तुम्हारा पूरा साथ । तुम ऐसी बन जाओ कि मेरी माँ भी बन सको । पत्नी भी । प्रेयसी भी... और सब कुछ जो एक नारी पुरुष के लिए बन सकती है। ममतामयी नारी.... । मोह में डूबा हुआ पुरुष । सच, आज मैं बिल्कुल अकेला हूँ । बिल्कुल अकेला चिमन्ना ।... तुम आज मेरे लिए नारी कहाँ हो । तुम तो ममता हो । ममता का सुख.... । मैं आज ममता और सुख की भूख महसूस रहा हूँ चिमन्ना । सच मानो... । सच ।"[1] जब व्यक्ति के मन में सेक्स की वासना न हो और सेक्स को प्यार माना जाए तब मानव मन में शान्ति होती है और किसी प्रकार की गलत दृष्टि नहीं होती।

इस प्रकार सेक्स का उदात्तीकरण वहाँ पर होता है जहाँ मानव-मन बहुत-सी समस्याओं या परेशानियों में होता है और उसे वह सब कुछ नहीं मिल पाता जिसकी उसे चाह होती है । वह नारी को प्यार की दृष्टि से देखता है और नारी में माँ, पत्नी, बहन और प्रेमिका आदि सभी रूपों को देखता है और केवल ममता की कामना वह करता है । वह अपने प्रिय के लिए सब कुछ करने को हमेशा तैयार रहता है ।

7.8 अहं का विनाशकारी के रूप में चित्रण

मध्यमवर्गीय समाज में अहं निरन्तर बढ़ रहा है । इस अहं ने मध्यमवर्गीय समाज को बुरी तरह ग्रस लिया है । परिणामस्वरूप असन्तुलित और उच्छृखंल व्यक्तियों के दर्शन पग-पग पर होते हैं । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'अपना-अपना आकाश' में उच्च मध्यमवर्गीय प्रकाश का अहं

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 76

विनाशकारी रूप में सामने आता है जब वह प्रिया के द्वारा मार दिया जाता है। वह प्रिया को अच्छा समझता है तथा अपने पर उसे पूरा अहं है । वह अपने को ही सबसे बड़ा मानता है और जिस वजह से वह सभी प्रकार के अच्छे व बुरे कार्य करता है । अन्त में उसे इन सब कार्यों के परिणाम भुगतने पड़ते हैं ।

7.9 अहं का रचनात्मक शक्ति के रूप में चित्रण

मध्यमवर्गीय लोगों में अहं जहाँ विनाशकारी होता है, वहीं रचनात्मक शक्ति देने वाला भी होता है । मध्यमवर्ग लोग अपना जीवन सुख से जीना चाहते हैं लेकिन जीवन में विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं जो उसके जीवन को दूभर बना देती हैं । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'इसीलिये' का अवस्थी भी अच्छा जीवन जीना चाहता है लेकिन वह नहीं जी पाता । वह पिता की मृत्यु और माँ के चले जाने के पश्चात् बिल्कुल अकेला पड़ जाता है । उसे हर समय किसी-न-किसी की तलाश रहती है । उसे मीनाक्षी मिलती है जो उसे छोड़ देती है । वह उससे बहुत प्यार करता था। वह टूट जाता है और चन्द्रा नामक युवती से शादी कर लेता है। लेकिन चन्द्रा के पुराने दोस्त शादी के बाद भी निरन्तर उससे मिलने आते हैं जिससे अवस्थी को और अधिक परेशानी और दु:ख उठाने पड़ते हैं । एक दिन जब चन्द्रा की तबियत ज्यादा खराब हो जाती है और वह ऑफिस में होता है । इस स्थिति में वह सोचता है कि उसके लिए सब समाप्त हो चुका है क्योंकि जीवन में उसने बहुत दु:ख झेले हैं । "मैं अब सिर्फ अपनी जिन्दगी जीऊँगा । अपनी खुशी, अपना सुख, अपना आराम देखूँगा । बहुत हो लिया, बहुत सोच लिया सबके लिए । क्या हुआ? अब और नहीं ।"[1] यहाँ पर अवस्थी चन्द्रा का अपने से दूर होना अच्छा समझता है क्योंकि वह केवल अपने ढंग से जीवन जीना चाहता है और बिना किसी बाधा के । यदि जीवन में कुछ बुरा हो जाता है तो हमेशा सकारात्मक सोच के साथ निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए। तभी

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 90

मानव का अहं रचनात्मक शक्ति देने वाला होता है । 'अपना-अपना आकाश' में मध्यमवर्गीय प्रकाश अपनी प्रेमिका प्रिया से अपने अहं का विस्तार करता हुआ दिखाई देता है, जिसे प्रिया अपना सहयोग देने की बात करती है । "मैं चाहता हूँ प्रिया, हम-तुम मिलकर कला की ऊँचाइयों तक पहुँच जायें । सारे देश में, देश में ही क्या, विदेशों में भी हमारे नामों की पहचान बने । हमारे गीत-संगीत की घोषणा होते ही लोगों की आँखों में एक चमक नाचने लगे ।

तुम चाहोगे, तो सब हो जायेगा । आखिर आज, जिनके नामों का जादू चल रहा है, वे भी तो कभी ऐसे ही-हमारी-तुम्हारी तरह ही रहे होंगे । आदमी क्या नहीं कर सकता । अगर वह संजीदगी और ईमानदारी से कुछ करना चाहे और उसमें अपना सोचा हुआ करने की कुब्बत हो, तो वह धरती और आसमान के छोरों को भी मिला सकता है ।"[1]

मध्यमवर्गीय लोग अपने अहं के कारण किसी भी निर्भर नहीं रहना चाहते और सही को सही और गलत को गलत मानते हैं । 'जनगाथा' उपन्यास में मध्यमवर्गीय जावेद और सलमा के प्रसंग को लिया गया है जिसमें जावेद ने सलमा को धोखा दिया और उसके पेट में पल रहे बच्चे को गिरवाना चाहा । यह बात सलमा को बहुत बुरी लगी और वह अपने अहं के कारण उसे छोड़ कर चली जाती है । वह उससे मिलना भी पसन्द नहीं करती हालांकि जावेद उससे मिलना चाहता है लेकिन वह अपना जीवन अपने ढंग से व्यतीत करना चाहती है और अपने अहं के कारण आत्म-निर्भर बन जाती है। उसे एक पब्लिक स्कूल में नौकरी मिल गई । "उसके बाद जावेद उससे कभी नहीं मिला और वह जावेद से कभी नहीं मिली । उसने अपने अतीत को हमेशा-हमेशा के लिए दफना दिया है । एक बुरा सपना था । जो राह की तन्हाई में उसे झिंझोड़ गया था । अब सुबह हो गई है । सपना चुक गया है । अब सारा दिन, दिन की धूप, दिन की उजस सलमा की है । वह अपनी सन्तान को अंगुली थमाए चलती रह सकती है । उसे किसी की

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 185

सहायता-संवेदना की जरूरत नहीं है ।"[1] अपने अहं के कारण मध्यमवर्गीय लोग अपनी राह चुन लेते हैं और उसी के अनुसार अपने ढंग से कार्य करते हैं । अपनी मर्जी से ही वह अपने कार्य करना चाहते हैं । 'भ्रमभंग' उपन्यास में चन्दन के पिताजी जब उसके रिश्ते की बात करते हैं तो अपने अहं के कारण चन्दन उसे मना कर देता है और स्वयं अपनी इच्छा की लड़की से शादी करने की बात कहता है। "आपने लिखा है लड़की सुन्दर और सुशील है । पिता जी, सुन्दरता सिर्फ देह की नहीं होती । और उसका सुशील होना-आपने कैसे जान लिया कि वह सुशील भी है? फिर एक और बात भी है पिताजी। एक मिलिट्री अफसर की लड़की एक अध्यापक पति के साथ भी सुशील बनी रहे, इसका भरोसा नहीं किया जा सकता । मुझे यह लिखने के लिए क्षमा करेंगे पिताजी, कि मैं विवाह के मामले में अपना सौदा नहीं होने दूँगा । विवाह मुझे करना है । जिंदगी मुझे निभानी है । ऊँच-नीच मुझे देखना है । अपनी पत्नी को छाँटने का अधिकार आप मेरे पास ही रहने देंगे.... यह मेरी प्रार्थना है।"[2] चन्दन अपना विवाह स्वयं अपनी पसंद से करना चाहता है । अहं के कारण ही चन्दन अपने आप को इतिहास रचने वाला मानता है । जब वह निराशा की स्थिति में आ जाता है तो अपने अहं के कारण उससे उबरता है और एक सकारात्मक सोच उसके अन्दर उत्पन्न हो जाती है । वह निरनतर संघर्षों से लड़ा है और उन पर विजय पायी है । वह सोच रहा है, "उदास नहीं हुआ करते । उठो। महसूस करो, अब दर्द कम है । महसूस करो, तुम्हारी जिंदगी सार्थक है । तुम जिम्मेदार हो । अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह । कितनी खुशी की बात है । तुम कहाँ पराजित हुए हो । तुमने तो संघर्षों को जीता है । तुम संघर्षों से निकले हो । उठो, उदास नहीं होते । तुमसे इतिहास

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 335
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 68

बनेगा, तुम जैसों से ही तो इतिहास बनता है।"[1] मध्यमवर्गीय लोग निराशा में भी आशा को ढूँढ लेते हैं और अपने अहं के कारण ही वे नई चीजों की खोज कर लेते हैं । वे मानते हैं कि मनुष्य का पुरुषार्थ बहुत श्रेष्ठ होता है जो निराशा, बुराईयों आदि का निरन्तर नाश करता है और जीवन को अच्छे ढंग से जीने की प्रेरणा मानव के अन्दर पैदा करता है । 'प्रिय शबनम' उपन्यास में यह दिखाया गया है, "यह ठीक है कि पिछले तूफान के निशान धरती पर शेष रह जाते हैं, लेकिन व्यक्ति का पुरुषार्थ उन निशानों का साफ करता रहा है । जितना भी कलुष है, सब भूला जा सकता है, और सारे उबड़-खाबड़ को समतल कर उस पर एक नयी जिन्दगी बोयी जा सकती है।"[2]

मध्यमवर्गीय लोगों में हमें अहं की भावना देखने को मिलती है, जिसके द्वारा उनको रचनात्मक शक्ति मिलती है और यह तब मिलती है जब किसी बात के बारे में सकारात्मक सोच लेकर चला जाए तथा जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ का डटकर मुकाबला किया जाए और यही सब हमें देवेश ठाकुर के उपन्यासों में देखने को मिलता है ।

7.10 हीनताग्रन्थि का चित्रण

यह एक प्रकार का मानसिक विकार है । जिन संवेगों की तृप्ति नहीं हो पाती वे दमित होकर हीन ग्रन्थि का रूप धारण कर लेती हैं और अपनी तृप्ति के लिए उद्वेलित करती हैं । वे संवेग विशेष रूप से अवचेतन में पड़े व्यक्ति को कचोटते रहते हैं । हीनताग्रन्थि भी एक प्रकार का मानसिक विकार है । एल्फर्ड एडलर के अनुसार मनुष्य की सर्वाधिक प्रबल आकांक्षा प्रभुत्व संस्थापना की रहती है, किन्तु जब वह अपनी प्रभुत्व कामना की पूर्ति कर पाता तो उसमें हीन भावना व्याप्त होकर ग्रन्थि का रूप धारण कर लेती है।[3]

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 74
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-1 (प्रिय शबनम), पृ० 292
3. डॉ० पुष्पा रानी, आधुनिक रामकाव्य : पुनर्मूल्यांकन, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण-2002, पृ० 248

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में अनेक स्थानों पर दिखया है कि मध्यमवर्गीय लोगों में हीनताग्रन्थि होती है और वे अपने को दूसरों से हीन समझते हैं । 'अपना-अपना आकाश' में उच्च मध्यमवर्गीय प्रकाश ऐसा ही है जो दिन-भर मजे करता है और बाहर की दुनिया में घुमता है लेकिन जब शाम को घर वापिस आता है तो घर आते ही उसे सब कुछ उजड़ा-उजड़ा-सा लगता है और उसे लगता है कि वह तो दोहरी जिन्दगी जी रहा है तथा फूलों से निकलकर बबूल में आ फँसा है । वह अपने आप को संगीत द्वारा कुछ समय के लिए इस दुनिया को बहलाने वाला मानता है और स्वयं को कोई महत्त्व नहीं देता । वह सोचता है, "काश, वह भी कॉलेज के उन नौजवानों में से एक होता.... । उसका भी उन-सा एक सपना होता.... । प्रोफेसर बनने का, डॉक्टर बनने का...। इंजीनियर बनने का....। लेकिन ऐसा कोई सपना उसका नहीं हो सकता.... । उसे तो गीत-गजलें गानी हैं । हारमोनियम और वॉयलेन बजानी हैं । कॉलेज के बुलावों का इन्तजार करना है, अपने मेहनताने की प्रतीक्षा करनी है.... । मेहनताना लेते वक्त वह उन नौजवानां के मुकाबले में कितना छोटा हो जाता है ।"[1] मध्यमवर्गीय लोगों में हीनता तो होती ही है लेकिन यदि कहीं पर सकारात्मक सोच हो तो दूसरे उसमें हीनता की भावना पैदा कर देते हैं, चाहे वह मजाक में ही क्यों न हो।

'जनगाथा' उपन्यास में शकुन के बारे में ऐसा कहा जाता है और इससे उसमें हीनता आ जाती है । "आप तो शोभा से काफी छोटी लगती हैं... मैं शकुन से हल्की-फुल्की मजाक करने के मूड में था ।

लेकिन मैंने देखा कि शकुन के चेहरे पर एक बदली आकर ठहर गयी है और माहौल कुछ भारी-सा हो गया है ।

मेरी बात का शकुन ने कोई जवाब नहीं दिया । जबरदस्ती मुस्कराने की कोशिश में मुझे वह और उदास-सी लगी..."[2] मध्यमवर्गीय लोगों में हीनता इस

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 122
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 269

हद तक बढ़ जाती है कि वे अपने का लाश की भांति समझने लगते हैं क्योंकि वे अपने जीवन में इस प्रकार का कार्य कर देते हैं जो जीवन-भर उन्हें कचोटता रहता है और अपना हक माँगता है । "घर लौटते हुए रास्ते भर मैं अपने को निरन्तर छोटा होता हुआ महसूस करता रहा और उसी अनुपात में, मेरी आँखों के सामने, जोशी का वजूद बढ़ता रहा ।

अपने दरवाजे तक आते-आते मेरा वजूद बिल्कुल खत्म हो चुका था । और जब मैं घर में घुसा तो मुझे लगा कि जैसे मैं नहीं बल्कि कोई लाश अँधेरी गुफा में प्रवेश कर रही है ।"[1]

मध्यमवर्ग के लोगों में निरन्तर हीनताग्रन्थि बढ़ती जाती है जिससे वे उबर नहीं पाते और अपने आप को दूसरों से छोटा मानते हैं। 'भ्रमभंग' उपन्यास का चन्दन निम्न मध्यमवर्गीय युवक है और नौकरी के लिए मारा-मारा फिरता है । जब बम्बई से उसका इन्टरव्यु आता है तो उसके पास इतने पैसे भी नहीं होते कि वह रेल का किराया जुटा सके । वह इसके लिए अलग-अलग स्थानों पर जाता है और सोचता है पता नहीं क्या होगा और उसे शर्म भी महसूस होती है । पैसे माँगना उसके लिए बहुत मुश्किल था और वह असमंजस की स्थिति में होता है कि वह क्या करे? "मैं किसी के पास नहीं जाता । रमेश पालीवाल की माँ के पास जाता हूँ जाते हुए झिझक होती है । कल रात खाना भी वहीं खाया था । आज फिर पहुँच जाऊँ पैसे माँगने!"[2] उसे निरन्तर महसूस हो रहा है कि वह दब रहा है । उसका अपना कोई महत्त्व नहीं है । उसकी आवाज में अब वो दम नहीं रहा और हीनता की भावना उसके अन्दर बढ़ती ही जा रही है । किसी तरह से वह इन्टरव्यु दे देता है और प्राध्यापक बन जाता है लेकिन इसके बाद भी उसकी हीनता उसका पीछा करती रहती है । वह अपने को निर्धन ही मानता है और

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 508
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 10

प्राध्यापक बनने के बाद भी वह अपनी स्थिति को सुधार नहीं पाता । वह शोभा से कह रहा है । "मैं इस आजाद देश का अध्यापक हूँ । जिसके पास न रहने के लिए घर है । न ठीक से जीने के लिए पैसा। बस इतना ही, कि जिन्दा बने रहो और तिल-तिल गलते रहो ।"[1] चन्दन स्वयं को बहुत हीन समझता है और जिस प्रकार के सपने उसने अपने जीवन में लिए थे वे सब धरे के धरे रह जाते हैं । वह अपना जीवन समस्याओं, कुण्ठाओं और पीड़ाओं में जीता है । वह अपने को संकुचित सोच वाला व्यक्ति मानता है और आगे बढ़ने की बजाय निरन्तर नीचे गिरता जा रहा है। वह सोचता है, "तुम कहाँ से कहाँ आ गिरे चन्दन....! कितने ऊँचे-ऊँचे सपने देखते थे । अब कितनी छोटी-छोटी बातों में उलझ गये हो तुम । सभी के साथ ऐसा होता है चन्दन! सच, मनुष्य नाम का यह प्राणी कितने विरोधाभासों में अपना जीवन जीता है । समाज....व्यक्तित्व....मान्यताएँ....आदर्श.... सब बड़े-बड़े शब्द और सभी तो वास्तविक जीवन की पत्थर-सी समस्याओं के सामने हवा होते हुए ! अन्ततः मनुष्य कितना संकुचित होता है, कितना आत्मकेंद्रित ।"[2] उसमें हीनताग्रन्थि निरन्तर बढ़ती ही जा रही है और वह निरन्तर कष्टमय जीवन जीने को मजबूर है । इसी प्रकार से 'प्रिय शबनम' के मंगल की स्थिति भी ऐसी ही है । वह निराश, हताश और हीन जिन्दगी जीने के लिए निरन्तर मजबूर है । वह अपनी शिष्या और प्रेमिका शबनम के बारे में सोचता है कि वह और उसके पिता दोनों एक बहुत बड़े घर में रहते हैं और एक अच्छी जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं लेकिन वह तो निर्धनता और हीनता का जीवन गुजार रहा है । वह स्वयं को शबनम से छोटा समझता है और वह उसके घर से जाना चाहता है। एक गहरी और घनी आत्महीनता की भावना ने मुझे जकड़ लिया था । मुझे तुम्हारे घर में एक बदहवास बेचैनी का अनुभव होता रहा था । चाहता था कि यहाँ से उठकर भाग जाऊँ, लेकिन उठने की शक्ति भी जैसे जड़ हो गयी

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 82
2. वही, पृ० 178

थी ।"[1] मध्यमवर्गीय मंगल अपने को इतना हीन समझने लगता है कि जैसे उसकी सभी प्रकार की शक्ति समाप्त हो गयी है और वह उठ भी नहीं सकता है । जब उसकी जिन्दगी में लाजो आती है तो इसके बाद उसकी जिन्दगी और भी बदत्तर हो जाती है। घर में लाजो और उसकी माँ आपस में झगड़ते रहते हैं और घर में किसी भी प्रकार की शान्ति नहीं होती तो वह हीनता से निरन्तर भरता चला जाता है और अपने जीवन को कूड़ा मानता है। उसके लिए अपना घर नरक बन चुका है और जिन्दगी गोबर। वह अपना समय व्यतीत करने के लिए ज्यादातर घर से बाहर ही रहता है और सोचता है, "मेरा घर मेरे लिये घर नहीं रहा । सुबह निकल जाता। दिन-भर सड़कें नापता । दोस्त । सहयोगी । कॉलेज स्टाफ रूम । यूनिवर्सिटी कैंपस । दादर-पार्टी ऑफिस । 'प्रतिवाद' की तैयारी। लेख। मैटर । कम्पोजिंग-प्रिटिंग-डिस्पैचिंग । प्राइवेट सर्कुलेशन । पत्रिका । कहीं गलत पते पर न पहुँच जाए। अकेले क्षण । अपनी जिन्दगी का लेखा-जोखा । सबसे ऊपर आत्म-ग्लानि का भाव उठा हुआ महसूस होता-जैसा फूलने पर लाश ऊपर उठ आती है ।"[2]

मध्यमवर्गीय लोगों में हीनता की भावना पहले से ही विद्यमान रहती है जो किन्हीं परिस्थितियों के कारण उभरकर सामने आती है और जिनके द्वारा उन्हें निरन्तर पीड़ित किया जाता है । इनकी यही भावना इनको आगे बढ़ने से रोकती है । देवेश ठाकुर के उपन्यासों का मध्यमवर्ग निरन्तर हीनताग्रन्थि में डुबा रहता है ।

मनोवैज्ञानिक यथार्थ से तात्पर्य उन मानसिक परिस्थितियों से है जो एक विशिष्ट काल में एक व्यक्ति को अप्रत्याशित आचरण के लिए बाध्य कर देती हैं । मध्यमवर्गीय लोगों में सेक्स की भावना रहती है और वह परिस्थितियों के कारण निरन्तर उभरती रहती है लेकिन अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखकर यह वर्ग इसे दबा देता है और कई बार तो पैसे पास न होने के कारण भी

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (प्रिय शबनम), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 230
2. वही, पृ० 266

इसे ठुकरा दिया जाता है । सेक्स के कारण ही कई बार इन्हें बुरे परिणाम भुगतने पड़ते हैं । शादी से पूर्व किया गया सेक्स मध्यमवर्गीय परिवारों में टूटन लाता है । मध्यमवर्गीय लड़का-लड़की प्रेम करते हैं तो कई बार लड़की को मजबूरीवश अपने प्रेमी के दोस्त से भी सेक्स करना पड़ता है । हालांकि लड़की की इसमें कोई इच्छा नहीं होती । सेक्स की अतृप्ति भी इस वर्ग के लोगों में दिखलाई पड़ती है। ये लोग सेक्स करना चाहते हैं लेकिन अपने संस्कारों के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते, जिससे वे अतृप्त रह जाते हैं और उनमें कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है । सेक्स के कारण मध्यमवर्गीय व्यक्ति को मानसिक संघर्ष भी करना पड़ता है, जिस कारण वह हर समय दु:खी रहता है। इन लोगों में सेक्स कुण्ठा की प्रतिक्रिया भी देखने को मिलती है । जब सेक्स न करने के कारण वे कुण्ठा का शिकार हो जाते हैं तो वे किसी भी औरत के नजदीक होने पर उसे छेड़ना आरम्भ कर देते हैं । सेक्स के कारण ही मध्यमवर्गीय लोगों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस वर्ग के लोग सेक्स करते हैं जिस कारण इन्हें इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं तथा दूसरी ओर ये अच्छा बनने की कोशिश भी करते हैं लेकिन इनकी समस्याएँ सेक्स के कारण ही निरन्तर बढ़ती जाती हैं, जिससे ये लोग परेशान रहते हैं और अपना जीवन अच्छे ढंग से नहीं जी पाते । सेक्स का उदात्तीकरण भी हमें इनमें देखने को मिलता है। इन लोगों में अहं की भावना भी होती है जो कई बार तो इनके लिए विनाशकारी सिद्ध होती है तो कई बार इन्हें रचनात्मक शक्ति भी प्रदान करती है । कई प्रकार की परिस्थितियाँ इनमें हीन-भावना भी पैदा कर देती हैं जिसके कारण इनके अन्दर हीनताग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है और इनका जीवन निराशा और दु:ख में व्यतीत होता है ।